२९/५

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः।।८।।

ज्ञान=संचित ज्ञान; **विज्ञान**=अनुभूत ज्ञान में; **तृप्त**=सन्तुष्ट; **आत्मा**=जीवात्मा; **कूटस्थः**=आत्मतत्त्व में स्थित; **विजितेन्द्रियः**=जितेन्द्रिय; **युक्तः**=स्वरूपसाक्षात्कार के योग्य; **इति**=इस प्रकार; **उच्यते**=कहा जाता है; **योगी**=योगी; **सम**=समदृष्टि वाला; **लोष्ट**=मिट्टी; **अश्म**=पत्थर; **काञ्चनः**=स्वर्ण (में)।

अनुवाद

ज्ञान-विज्ञान से तृप्त पुरुष को आत्मज्ञानी योगी कहा जाता है। ब्रह्मतत्त्व में स्थित ऐसा जितेन्द्रिय मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण आदि पदार्थों में समभाव रखता है।।८।।

तात्पर्य

परतत्त्व की अनुभूति से शून्य पुस्तकीय ज्ञान की कोई सार्थकता नहीं है। शास्त्र (पद्मपुराण) में उल्लेख है:

अतः श्रीकृष्णनामादि न भवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः।
सेवोन्मुखे हि जिह्वादौ स्वयमेव स्फुरत्यदः ।।

'सांसारिक विकारमयी कुंठित इन्द्रियों के द्वारा श्रीकृष्ण के नाम, रूप, गुण, लीलादि के दिव्य स्वरूप को नहीं जाना जा सकता। परन्तु भगवत्सेवा में निमग्न हो जाने पर श्रीभगवान् के नाम, रूप, गुण तथा लीला के चिन्मय स्वरूप की अपने-आप अनुभूति हो जाती है।'

यह श्रीमद्भगवद्गीता कृष्णभावनामृत का अनुपम विज्ञान है। केवल लौकिक विद्वत्ता से कृष्णभावनामृत की प्राप्ति नहीं होती। इसके लिए शुद्धहृदय भक्त का सत्संग आवश्यक है। श्रीकृष्णकृपा से कृष्णभावनाभावित महात्मा को तत्त्व का साक्षात्कार सुलभ हो जाता है, क्योंकि वह शुद्ध भक्तियोग से परितृप्त है। विज्ञान से कृतार्थता तथा दिव्य ज्ञान से दृढ़ निष्ठा होती है जबकि केवल पुस्तकीय ज्ञान से तो बाह्य विरोधाभासों द्वारा मोहित तथा भ्रमित हो जाना बड़ा सरल है। श्रीकृष्ण का शरणागत तत्त्वानुभवी जीव ही वास्तव में आत्मसंयमी है। वह माया-मुक्त हो जाता है, लौकिक विद्वत्ता से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहता। औरों के लिए लौकिक विद्वत्ता और मनोधर्मी सोने के समान उत्तम हो सकती है; परन्तु श्रीकृष्ण-भक्त के लिए तो इनका मूल्य कंकड़-पत्थर से कुछ भी अधिक नहीं है।

३०/५

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते।।९।।

सुहृद्=स्वार्थरहित हितैषी; **मित्र**=स्नेहमय हितकारी; **अरि**=शत्रु; **उदासीन**=शत्रुओं में तटस्थ; **मध्यस्थ**=शत्रुओं में पँच; **द्वेष्य**=ईर्ष्यालु; **बन्धुषु**=संबन्धियों में;